खाँड़ो जगाउने

[कवित्त]

प्रकाशकः—बाबू माधवप्रसाद शर्मा,
बनारस।

प्रकाशक
बाबू माधवप्रसाद शर्मा,
बनारस

मूल्य =)
२० पैसा

मुद्रक—
जयनाथ शर्मा,
जनबन्धु मुद्रणालय, सेनपुरा, बनारस।

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

खाँड़ो-जगाउने

❀ कवित्त ❀

श्री ३ मल्ल महाराजा मन्त्री सर जङ्गबहादुर के फौज के फौजमें, भोटके निकट में, काशीके तीरमें, मन्त्रीके खेलसे, मन्त्रीके बूझसे, चले लस्कर जी धन्य धन्य मन्त्री रणके बहादुर प्रतापी धीर सम्सेर धर्म शरीर

भक्तवीर के प्रताप से, पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण भोट मुग्लान दिल्ली किल्ला–काँगडा लङ्का-पलङ्का। लाभ्सी लाम्कानाका घोरमुखाका देसमें चलते हैं। कौन-कौन पल्टन चले। आगे श्रीनाथ चले, राजदल, कंपू चले, देवीदत्त, वज्र बहादुर, कालीबहादुर, भैरवनाथ, जगन्नाथ, कालीदल, ऐसे-ऐसे पल्टन चले। जर्णैल, कर्णैल, चले। सुबेदार,

जमादार, हवल्दार, हुद्दा सिपाही चले। रैफल पल्टन भये तयारी। आसा गुर्जा नगारा नीसान भेरी गर्जन लागे। फेरी दिसा-बिदिसा पृथ्वी कंपकरते दमकी दम्-दम् चले हैं। श्री ३ महाराज मन्त्री सर जङ्गबहादुरके सवारी होनेका बखत है। ताजी तुर्की वैला अबलख् तुरङ्ग सुरङ्ग मुस्की चीनीत्रा टागन् ऐसे-ऐसे घोड़ा चलते हैं। धरती धकेलें

पहरा ठेल् बैरीका वासमा जाई खेल् । काँधमें बन्दूक तोस्तान् झल्के थे, कहे कबीर सुनो भाई साधु श्री श्री श्री मल्ल महाराज कै सवारी हुई रानी के डोलामें चलते हैं । मुलुक-मुलुक थरकन लागे हैं । कामदारी, काजी, पीपा, खलासी, केटी सुसारे, बैठके चलते हैं । कैसा-कैसा केटी चलते हैं, रामदरी ज्यामदरी कृशोदरी अल्लन्परी हुस्नपरी

सूर्यमती चन्द्रावती विष्णुमाया शिवमाया चन्द्रमाया वागमती सरस्वती लालवदन् स्यामवदन् रामवदन् कृष्णवदन् अनङ्गवदन् भौमवदन् रत्नवदन् चन्द्रवदन् ऐसे-ऐसे केटी चलते हैं । लाल झपनीका फुँदा लरकन लागे, हीरा मोती झलकन लागे, मूँगा पुष्पराज नवरत्न टल्कन लागे, भुँगागढीका भोटे हर्कन लागे, गोर्खाली जती सर्कन लागे ।

चीन महाचीन् पेचीन् बेलायत् लाहौर दिल्ली देस-देसावर थर्कन लागे। सीसा-गोली, बम्-गोली ऊपर वर्षन लागे है। कौन-कोन तोप चले, लाली-तोप, काली-तोप, भैरव फलामे-तोप, आठ-फन्नि, दस-फन्नि बाह्र-फन्नी ऐसे-ऐसे तोप चले हैं। श्री ३ मन्त्री महाराज सर जङ्गबहादुरने लाहौर दिल्ली में सिपाही फिरा-उन लागे। छर्रा गोली छुरी

कटारी चुपि च्यापसा खुँडा ढाल तरवार खुकुरी वर्षन लागे, वैरीका फौज सब भागे। श्री पसुपतिनाथ गुह्यकाली सँग जीत बाजी मागे, ऊँधो गङ्गा की साँध लगाई, उभो महाचीन मारी, तिस्टामा गै नमोन्नम खाँड़ो पखाली लोहासुर पारस गोत्रका सीवदोत्र श्री ५ महाराजाधिराज सुरेन्द्र विक्रम साहा बहादुर देवानाम् सदासमर विजयिनाम्को खाँड़ो

जाग्यो। श्री ५ मन महाराज-
धिराज का सिपाही सुरा औ
लड्नका पूरा उभो भोट मदेस
कासी कुँचबीहार लाहौर दिल्ली
बेलायत को साँध लगाई बाह्र
हजार बैरीको टाऊकामा खुँडाले
ठ्याक्-ठ्याक्। उत्तर चीन, महा-
चीन, पेचीन, दक्षिण रोम,
स्याम, पूर्व वलतबखान, चार
दीसा सात द्वीप नवखण्ड सहान
सिख नवाव र गाउँ दीसा घोर-

मुखाका देश में चलते हैं और,
फेरी नेपाल देश जाई श्री पशु-
पती गुह्येश्वरी गोरखनाथ
मछीन्द्रनाथ भैरवनाथ दक्षिण-
काली वज्रयोगिनी चार नारायण
नवदुर्गा भवानीको शरण पाई,
हेमाना खोरसाना खुकुरी छुरी
कटारी पत्थर गोली तीर कमानी
खुबतवले पेस्तवल मार्तवल
वज्रवाण फर्सवाण अग्नीवाण

जलवारा वायुवारा पर्वतवारा लगाते वैरी न छोड़े प्रान् । ढाल तलवार देखे, झीलीक् भागे सारा मुसल्मान् । कम्बर तोस्तान्, टेढ पगरी बाँधे, तोडा बाज्ये, बीकुल खोले, घोडाको मारे कोडा, ज्यानकी आस छोडा, खाता है सत्तू थोडा, कौन पुछे जोडा, दमकी दम्-दम् नगारा फौज बाजे, समाज साजे श्रीपसु-

पतीनाथ गुह्येश्वरी से विजय मागे । श्री ५ महाराजाधिराज श्री सुरेन्द्र विक्रम साहा बहादुर देवानाम् सदासमर विजयिनाम् श्री ३ महाराजा मंत्री सर जङ्गबहादुर राणाका प्रतापले भोट लखनौका बैरी भागे, सात-द्वीप नवखण्डमा जस गाउन-लागे, चर चौकी पहरा सब मारी, भैगयो देस झाडी, फत्ये

फत्ये फत्ये स्वस्ति श्री गिरिराज चक्र चूडामणी नर-नारायणेत्यादि विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री श्री श्री श्रीमन् महाराजाधिराज श्री पृथ्वीनारायण साहा, सिंहप्रताप साहा, रणबहादुर साहा, गीर्वाणयुद्ध विक्रमसाहा, राजेन्द्रविक्रम साहा, सुरेन्द्रविक्रम साहा, त्रैलोक्यविक्रम साहा, पृथ्वी वीरवि-

क्रम साहा, त्रिभुवन वीरविक्रम साहाको खाँड़ो जाग्यो। वैरीका थाल्लोत्लो ठ्याक्-ठ्याक्।

इति खाँड़ो समाप्तः